INTERNATIONAL JOURNAL

ETERNITY

Research Evolution & Analysis

ISSN 2321-3302

December 2015 VoI: III, Issue: V

Chief Editor
Prof. Dinesh k. Bhoya

Green Flag Foundation
A National Level Quality Book Publication

[22] 105-107
भारतीय अध्यात्मिक दर्शन और नारी सातत्य
डो. ज़ाकेरा सिद्दीकी, एफ.डी. आर्टस एन्ड कोमर्स, कोलेज फोर विमेन

[23] 108-115
कबीर की कविता में प्रेमतत्व
डो. भारती सी. रावल, जी. डी. मोदी कोलेज ओफ आर्टर्स पालनपुर जि. बनासकांठा

[24] 116-122
गुजराती दलित कविता में वेदना और विद्रोह
डॉ. नागसेन ई. श्रीमाली, हिन्दी विभाग, आर्टस ॲन्ड कोमर्स कोलेज, दहेगाम, जि.-गांधीनगर.

[25] 123-127
અનુસૂચિત જનજાતિ (આદિવાસી) ભદ્રવર્ગો અને સામજિક-સાંસ્કૃતિક અને આર્થિક પછાતપણું
પ્રા. ગણેશકુમાર યુ. ગામીત (સમાજશાસ્ત્ર), સરકારી વિનયન અને વાણિજ્ય કોલેજ કાછલ તા. મહુવા જી. સુરત

[26] 128-130
કાવ્યાનુશાસનનું મૂલ્યાંકન – મારી નજરે
પટેલ હર્ષદભાઈ ગોવિંદભાઈ, મુ.પો. વહેવલ (સેવાપુરી ફળિયા), તા. મહુવા, જી. સુરત, પીન. ૩૯૪૨૪૮

[27] 131-135
આજ્ઞાત્મક કાયદાની વિચારસરણીની પ્રવર્તમાન સમયમાં ટીકાત્મક વિશ્લેષણ
ડૉ. અરવિંદકુમાર એલ. પટેલ, I/C. પ્રિન્સીપાલ, શેઠ વી.એસ. લૉ. કોલેજ, ઊંઝા

[28] 136-140
સ્ત્રીઓને સમાન તક અને અધિકારો માટેના પ્રયાસ
ડૉ. મૃગેશ એમ. નાયક, અધ્યક્ષ, ઈતિહાસ વિભાગ, એમ.એમ. ચૌધરી આર્ટ્સ કોલેજ, રાજેન્દ્રનગર

[29] 141-144
આદિવાસી ભીલ રાજાઓનાં રાજ્યોનો અસ્ત
ડૉ. પી.આર. ગવલી, સમાજશાસ્ત્ર વિભાગ, શ્રી અંબાજી આર્ટસ કોલેજ, અંબાજી

[30] 145-148
૨૧મી સદીની નારીની સામાજીક સમસ્યાઓ:
ડૉ. રમેશ આર. પટેલ*, ઈતિહાસ વિભાગ, એમ.એમ. ચૌધરી આર્ટ્સ કોલેજ, રાજેન્દ્રનગર
પ્રા. ડી.એસ.ચૌધરી**, ઈતિહાસ વિભાગ, એમ.એમ. ચૌધરી આર્ટ્સ કોલેજ, રાજેન્દ્રનગર

[31] 149-153
ધરમપુરના તાલુકાની પ્રાથમિક શાળાઓમાં આચાર્યોની દષ્ટિએ આર.ટી.ઈ. એકટના
અમલીકરણની અસરો.
ગરાસિયા વિરેન્દ્રભાઈ એમ., ઉપશિક્ષક, નાનીઢોલડુંગરી પ્રાથિક શાળા, તા. ધરમપુર, જિ. વલસાડ

ETERNITY Research Evolution & Analysis

"कबीर की कविता में प्रेमतत्व"

डॉ. भारती सी रावत
जी. डी. मोदी कोलेज ओफ आर्टस पालनपुर जि. बनासकांठा

ईस जगत में 'प्रेम' परमात्मा का प्रतिनिधि हैं, समय की धारा में समयातीत का प्रवेश हैं । मनुष्य की दुनिया में अति मानवीय की किरण का आगमन हैं । प्रेम परमात्मा का प्रतिक हैं । प्रेम ज्ञान मस्तिष्क को तृष्ट करता हैं, प्रेम हदय को शीतलता देता हैं । आनंद की चाह सबको हैं, यह प्रेम की उदत्तता ही दे सकती हैं । कबीर, जायसी, कुतबन आदि सभी ने इस प्रेमतत्व को अपनाया हैं । प्रेम के मार्ग पर बडी सावधानी की जरुरत हैं । संतोंने प्रेम को खडग की धार कहा हैं । वह भी पतली धार पर चलने जैसा है, इधर गिरे तो कुआं गिरे तो खाई । सम्हले तो पहुँचे ।

हर बच्चा प्रेम को लेकर पैदा होता है, लेकिन बडे होने की प्रक्रिया में प्रेम कहीं खो जाता हैं, और उस प्रेम को खोने के कारण ही हदय के भीतर एक रिकतता, एक अभाव, एक खालीपन रहता हैं । हम प्रेम को खोज रहे है परमात्मा को नही । यद्यपि प्रेम मिल जाये, तो परमात्मा से मिलने का घ्वार मिल जाता हैं । पर परमात्मा को हमने कभी जाना नहीं है, उसकी कोई पहचान नहीं हैं । सुरज हररोज निकलता है सवाल हैं आँख का । आँखे ही अँधी हो, सूरज मिल भी जाये क्या करें । अंधरे में ही रहेंगें । आँख चाहिए - वही आँख प्रम हैं । परमात्मा चारों तरफ मौजुद हैं, आंख खो गई हैं, अनुभव करने की क्षमता खो गई हैं । प्रम का अर्थ है अनुभव करने की क्षमता, संवेदनशीलता । प्रेम का अर्थ है श्रध्धा प्रेम का अर्थ है भरोसा, प्रेम का अर्थ है स्वीकार । प्रेम से बडा कोई नहीं है प्रेम से ही परमात्मा मिलता है । विद्वान नित्शे ने कहा हैं । प्रेम से ही हमारे अंतर चक्षु खुलते हैं ।

मध्यकालीन संतो में कबीर अग्रगण्य हैं । वे सृष्टा - दृष्टा दोनों थे । वे सुधारक थे । उच्च कोटि के भक्त थे । भक्ति के क्षेत्र में नारद का, कबीर पर प्रभाव हैं । नारदभक्ति का प्रेमतत्व कबीर की भक्ति का भी आधारभूत तत्व हैं । नारद के अतिरिक्त कबीर पर सूफियों का भी प्रभाव रहा हैं । अब हम यहाँ कबीर के काव्य में जो प्रेमतत्व हैं, प्रमरस है उसे समझने की कोशीश करें । काव्य में जो स्वरुप कबीरने उपस्थित किया हैं वह बहुत व्यापक और विशाल हैं ।

अकथ कहानी प्रेम की कुछ कही न जाय ।
गूंगे केरी सरकार, खाई और मुस्काय ॥
क.वा.सबद-पद 1 पृ. 1

कबीर कहते है कि प्रेम की कथा अकथनीय हैं । इसका वर्णन उसी प्रकार नहीं किया जा सकता, जिस प्रकार गूंगा व्यक्ति शर्करा को खाकर आनंदित तो होता रहता हैं परंतु मधुरता का वर्णन नहीं कर सकता, उसी प्रकार प्रेमानुभूति का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

प्रेम की महिमा पर कबीरने जोर इसीलिए दिया है कि प्रम करने के लिए मनुष्य स्वाधीन हैं पराधीन नहीं और मनुष्य की सर्वाधिक महत्वपूर्ण मांग प्रेम की हैं । इसे वितरित करके हम स्वयं को और सम्पूर्ण समाज को सुखी बना सकते हैं ।

कबीर का प्रेम उच्च कोटि का हैं, कबीर जिस देश में रहते हैं, उस देश का सब कुछ विचित्र हैं - हम वासी उस देश के, जहाँ बारह मास विलास ।

प्रेम झरै विकसे कँवल, तेजपुंज परकास ॥
हम वासी उस देश के, जहवाँ नहिं मास वसंत ।
नीझर झरे महा अमी, भीजत है सब संत ॥

स.क.सा. पृ. 64

वह देश जहाँ बारह महीने वसंत हैं, जहाँ प्रेम का निर्झर झरता रहता है, जहाँ अनंत ज्योतिपूंज से महा - अमृत बरसता रहता हैं, जहाँ जाति कुल का विशेषत्व नहीं जहाँ आकाश और धरती में अंतर नहीं, जहाँ परब्रह्म की आनंद केलि निरंतर चल रही हैं, जहाँ अगम्य का दीपक बिना बाती और तेल के ही जल रहा हैं । अपूर्व है वह देश ! कबीर उसी देश के वासी थे ।

हमने देखा है कि कबीरदास की भक्ति-साधना का केन्द्र बिंदु प्रेम लीला है । किंतु इस लीला का जो स्वरुप कबीरदासने उपस्थित किया है, वह बहुत व्यापक और विशाल हैं ।

चुनरिया हमरी प्रिया ने सँवारी
कोई पहिरै पिय की प्यारी !
आठ हाथ की बनी चुनरीया
पँच रँग पटिया पारी !
चाँद सुरज जामें आँचल लागे
जगमग ज्योति उजारी
बिन ताने यह बनी चुनरिया
दास कबीर बलिहारी ॥

कबीर ह. प्र. पृ. 149

परमात्मा रुपी प्रिय ने अपने भक्त रुपी प्रेयसी को जो चुनरी सँवार कर दी है वह मामुली चुनरी नहीं हैं कैसी है यह चुनरी ? अष्टप्रहर - रुपी आठ हाथों की वह बनी हैं और पंचतत्वरुपी पाँच रंगो से रंगी हैं । इस महान शृगांर पटके आँचल में सूर्य, चंद्र और तारों की जगमग ज्योति जल रही हैं । इस चुनरी को किसीने